

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचारों का भारतीय समाज पर प्रभाव

¹Jyoti Bharti, ²Dr. Yatendra Pal

¹(Research Scholar)

²Associate Professor (Supervisor)

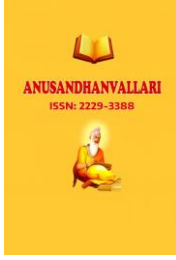
Institute of Education and Research Manglayatan University, Beswan, Aligarh

सारांश, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जैसे महान शिक्षाविद, का जन्म 22 फरवरी सन् 1856 (फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी, विक्रम संवत् 1913) को पंजाब प्रान्त के जालन्धर जिले के तलवान ग्राम में एक खत्री परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री नानकचन्द विज ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा शासित यूनाइटेड प्रोविन्स (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में पुलिस अधिकारी थे। उनके बचपन का नाम बृहस्पति विज और मुंशीराम विज था, किन्तु मुन्शीराम सरल होने के कारण अधिक प्रचलित हुआ। पिता का स्थानान्तरण अलग-अलग स्थानों पर होने के कारण स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती की आरम्भिक शिक्षा अच्छी प्रकार नहीं हो सकी। लाहौर और जालंधर स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के मुख्य कार्यस्थल रहे। एक बार आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती वैदिक-धर्म के प्रचारार्थ बरेली पहुँचे। पुलिस अधिकारी नानकचन्द विज अपने पुत्र मुंशीराम विज को साथ लेकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का प्रवचन सुनने पहुँचे। युवावस्था तक मुंशीराम विज ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते थे। लेकिन स्वामी दयानन्द जी के तर्कों और आशीर्वाद ने मुंशीराम विज को दृढ़ ईश्वर विश्वासी तथा वैदिक धर्म का अनन्य भक्त बना दिया। वे एक सफल वकील बने तथा काफी नाम और प्रसिद्धि प्राप्त की। वकालत के साथ आर्य समाज जालंधर के जिला-अध्यक्ष के पद से उनका सार्वजनिक जीवन प्रारम्भ हुआ। आर्य समाज में वे बहुत ही सक्रिय रहते थे।

मुख्य शब्द, शिक्षाविद, हिन्दू समाज, शुद्धि आन्दोलन, स्वाधीनता, स्वराज्य, शिक्षा आदि।

परिचय, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती भारत के शिक्षाविद, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तथा प्रथम आर्य समाज के संन्यासी थे। जिन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं का अत्यन्त ही तेजी के साथ प्रसार किया। वे भारत के उन महान राष्ट्रभक्त संन्यासियों में अग्रणी थे, जिन्होंने अपना जीवन स्वाधीनता, स्वराज्य, शिक्षा तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित कर दिया था। उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय सहित अनेक शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की और हिन्दू समाज व भारत को संगठित करने तथा 1920 के दशक में शुद्धि आन्दोलन चलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उन्होंने अछूतों के लिये भी महान कार्य किया। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने सन 1922 में कहा था कि “श्रद्धानन्द अछूतों के महानतम और सबसे सच्चे भारतीयता के हितैषी हैं।” कांग्रेस में उन्होंने 1919 से लेकर 1922 तक सक्रिय रूप से महत्वपूर्ण भागीदारी की। 1922 में गुरु का बाग सत्याग्रह के समय अमृतसर में एक प्रभावशाली भाषण दिया, सिक्खों के धार्मिक अधिकार की रक्षार्थ उन्होंने सत्याग्रह किया, जिस पर 1922 में अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

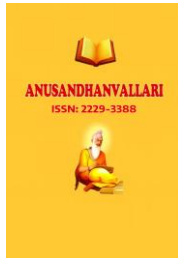
स्वामी श्रद्धानन्द उर्फ महात्मा मुंशी राम, स्वामी श्रद्धानन्द देश के महान आर्य समाजी, समाजसेवी, शिक्षाविद और स्वतंत्रता सेनानी थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भी हिस्सा लिया और भारत के एक अद्वितीय स्वतंत्रता सेनानी के रूप में उभरे। उन्होंने देशवासियों को अपनी मातृभूमि को विदेशी ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने के लिए प्रेरित किया। इन्होंने भारत माता की मुक्ति के लिए कांग्रेस के साथ मिलकर काम करना शुरू किया। उन्होंने 13 अप्रैल 1919 के जलियांवाला बाग हत्याकांड की कड़ी निंदा की और दिल्ली में रॉलेट एक्ट के खिलाफ देशव्यापी विरोध में शामिल हुए। दमनकारी रॉलेट एक्ट के खिलाफ श्रद्धानन्द ने दिल्ली के चांदनी चौक में एक जुलूस का नेतृत्व किया। जब नरसंहार के बाद अमृतसर में मार्शल लॉ लगा दिया गया, तो स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती आगे आए और शहर में कांग्रेस के अधिवेशन की सभी व्यवस्थाएँ कीं। उन्होंने हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए भी आवाज उठाई। यह इस तथ्य से स्पष्ट था कि स्वामी श्रद्धानन्द एकमात्र हिंदू संन्यासी थे जिन्होंने राष्ट्रीय एकता के लिए 4 मार्च 1919 को नई दिल्ली में जामा मस्जिद से मुसलमानों की एक विशाल सभा को संबोधित किया था। अपने संबोधन में, उन्होंने मुसलमानों को स्वतंत्रता आंदोलन में



भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती ने भारत में खिलाफत आंदोलन का भी समर्थन किया और विदेशी ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीय मुसलमानों के साथ अपनी पूरी एकता दिखाई।

श्रद्धानंद महात्मा गांधी के करीबी सहयोगी थे और कांग्रेस के लिए काम करते थे। लेकिन 1920 के दशक में उन्हें लगा कि देश की पूरी स्थिति बदल गई है। मुस्लिम लीग के तहत मुसलमान अपने अधिकारों के लिए लड़ रहे थे और कांग्रेस मुसलमानों का विश्वास और समर्थन पाने में विफल रही। श्रद्धानंद ने महसूस किया कि कांग्रेस के मुस्लिम सदस्य अपने समुदाय पर अधिक ध्यान दे रहे थे और पार्टी में अपने लोगों के लिए अधिक प्रतिनिधित्व और नेतृत्व पाने के लिए लड़ रहे थे। उस स्थिति ने श्रद्धानंद को कांग्रेस से परे सोचने के लिए मजबूर किया, जो बढ़ती सांप्रदायिक स्थिति में हिंदू अधिकारों की रक्षा करने में विफल रही। उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी और हिंदू महासभा में शामिल हो गए, जिसने हिंदू एकजुटता पर अधिक जोर दिया। इन्होंने देश में हिंदू धर्म और आर्य समाज के विकास के लिए काम किया। 1926 में, स्वामी श्रद्धानंद ने हिंदू-संगठन (मरती हुई जाति का उद्धारकर्ता) नामक पुस्तक लिखी। उस पुस्तक ने हिंदू धर्म के पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। श्रद्धानंद ने अपना पूरा जीवन देश में हिंदू धर्म को मजबूत करने के लिए बलिदान कर दिया। राष्ट्र के लिए स्वामी श्रद्धानंद के बलिदान को याद करने के लिए, भारतीय डाकघर ने 1970 में उन पर एक डाक टिकट जारी किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के महाप्रयाण के बाद उन्होंने स्वयं को स्व-देश, स्व-संस्कृति, स्व-समाज, स्व-भाषा, स्व-शिक्षा, नारी कल्याण, दलितोत्थान, स्वदेशी प्रचार, वेदोत्थान, पाखण्ड खण्डन, अन्धविश्वास-उन्मूलन और धर्मोत्थान के कार्यों को आगे बढ़ाने में पूर्णतः समर्पित कर दिया। गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना, अछूतोद्धार, शुद्धि, सधर्म प्रचार, पत्रिका द्वारा धर्म प्रचार, सत्य धर्म के आधार पर साहित्य रचना, वेद पढ़ने व पढ़ाने की व्यवस्था करना, धर्म के पथ पर अडिग रहना, आर्य भाषा के प्रचार तथा उसे जीवीकोपार्जन की भाषा बनाने का सफल प्रयास, आर्य जाति के उन्नति के लिए हर प्रकार से प्रयास करना आदि ऐसे कार्य हैं जिनके फलस्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द अनन्त काल के लिए अमर हो गए। उनका विवाह श्रीमती शिवा देवी के साथ हुआ था। जब आप 35 वर्ष के थे तभी शिवा देवी स्वर्ग सिधारीं। उस समय उनके दो पुत्र और दो पुत्रियां थीं। इन्द्र विद्यावाचस्पति उनके ही पुत्र थे। सन् 1917 में उन्होंने सन्यास धारण कर लिया और स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से विख्यात हुए।

स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा शुद्धि आंदोलन वामी श्रद्धानन्द ने जब कांग्रेस के कुछ प्रमुख नेताओं को मुस्लिम तुष्टीकरण की घातक नीति अपनाते देखा तो उन्हें लगा कि यह नीति आगे चलकर राष्ट्र के लिए विघटनकारी सिद्ध होगी। इसके बाद कांग्रेस से उनका मोहभंग हो गया। दूसरी ओर कट्टरपंथी मुस्लिम तथा ईसाई हिन्दुओं का मतान्तरण कराने में लगे हुए थे। स्वामी जी ने असंख्य व्यक्तियों को आर्य समाज के माध्यम से पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित कराया। उन्होंने गैर-हिन्दुओं को पुनः अपने मूल धर्म में लाने के लिये शुद्धि नामक आन्दोलन चलाया और बहुत से लोगों को पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित किया। स्वामी श्रद्धानन्द पक्के आर्य समाजी थे, किन्तु सनातन धर्म के प्रति दृढ़ आस्थावान पंडित मदनमोहन मालवीय तथा पुरी के शंकराचार्य स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ को गुरुकुल में आमंत्रित कर छात्रों के बीच उनका प्रवचन कराया था। स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वेच्छा एवं सहमति के पश्चात पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मलकान राजपूतों को शुद्धि कार्यक्रम के माध्यम से हिन्दू धर्म में वापसी कराई। इस महत्वपूर्ण कार्य पर शासन की तरफ से कोई रोक नहीं लगाई गई थी जबकि इस भारत में ब्रिटिश काल था। 23 दिसम्बर 1926 को नया बाजार स्थित उनके निवास स्थान पर अब्दुल रशीद नामक एक उन्मादी धर्म-चर्चा के बहाने उनके कक्ष में प्रवेश करके गोली मारकर इस महान विभूति की हत्या कर दी। उसे बाद में फांसी की सजा हुई। उनकी हत्या के दो दिन बाद अर्थात् 25 दिसम्बर, 1926 को गुवाहाटी में आयोजित कांग्रेस के अधिवेशन में जारी शोक प्रस्ताव में जो कुछ कहा वह स्तब्ध करने वाला था। गांधी के शोक प्रस्ताव के उद्बोधन का एक उद्धरण इस प्रकार है "मैंने अब्दुल रशीद को भाई कहा और मैं इसे दोहराता हूँ। मैं यहाँ तक कि उसे स्वामी जी की हत्या का दोषी भी नहीं मानता हूँ। वास्तव में दोषी वे लोग हैं जिन्होंने एक दूसरे के विरुद्ध घृणा की भावना को पैदा किया। इसलिए यह अवसर दुख प्रकट करने या आँसू बहाने का नहीं है।" गांधी ने अपने भाषण में यह भी कहा, "मैं इसलिए स्वामी जी की मृत्यु पर शोक नहीं मना सकता। हमें एक आदमी के अपराध के कारण पूरे समुदाय को अपराधी नहीं मानना चाहिए। मैं अब्दुल रशीद की ओर से वकालत करने की इच्छा रखता हूँ।" उन्होंने आगे कहा कि "समाज सुधारक को तो ऐसी कीमत चुकानी ही पड़ती है।



स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी की हत्या में कुछ भी अनुपयुक्त नहीं है। "अब्दुल रशीद के धार्मिक उन्माद को दोषी न मानते हुये गांधी ने कहा कि" अनपढ़े लोग हैं जिन्होंने अब्दुल रशीद को उन्मादी बनाया। स्वामी जी की हत्या के पश्चात् हमें आशा है कि उनका खून हमारे दोष को धो सकेगा, हृदय को निर्मल करेगा और मानव परिवार के इन दो शक्तिशाली समूहों के विभाजन को मजबूत कर सकेगा।" इसका प्रमाण गांधी जी को भी जब हुआ होगा जब उनके साथ भी ऐसा हुआ था।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन,

दयानंद, ए. बी. स्वामी (2024) एक शिक्षित व्यक्ति को विनम्र होना चाहिए और अच्छे चरित्र को धारण करना चाहिए। उन्हें भाषण और दिमाग पर नियंत्रण रखना, उर्जावान होना माता – पिता, शिक्षकों बड़ों और अतिथि का सम्मान करना, और बुरीसंगति से दूर रहना विद्वानों की संगति का आनंद लेना और उदार होना आवश्यक था। उन्होंने छोटी-सी पुस्तक लिखी जिसका नाम है व्यवहारभानुः। इस पुस्तक में उन्होंने एक पंडित विद्वान व्यक्तित्व के गुणों को चित्रित किया, जो उन्हें सिखाने का हकदार था और उन्हें एक मूर्ख व्यक्ति चरित्र के साथ विपरीत व्यवहार करना था, जिसे बच्चों की शिक्षा के साथ नहीं सौंपा जाना चाहिए। स्वामी दयानंद तीन चार विषयों के सतही ज्ञान से नहीं बने हैं क्योंकि दुर्भाग्य से वर्तमान में ऐसा ही होता है, लेकिन इसमें व्याकरण साहित्य, वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत और आयुर्वेद के साथ शुरु होने वाले विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।

जयसवाल, राजीव कुमार, (2023), शोधकर्ता मार्गदर्शक, शास्त्री, बी शंभूनाथः स्वामी श्रद्धानंद का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान स्वामी जी अनन्य राष्ट्र भक्त थे, कभी-कभी वे गुरु तेगबहादुर, गुरु अर्जुनदेव, गुरु गोविंद सिंह आदि के बलिदान की कहानी अपने व्याख्यानों में सुनाते हुए यह कामना प्रकट करते थे कि जीवन का भी उसी तरह बलिदान हो धर्मवीर, कर्मवीर, निर्भीक संन्यासी, जिनके नाम से अंग्रेज सरकार भी डरती थी।

द एल्ट, कोनराड (2022) हिंदू मन का उपनिवेशीकरण— हिंदू पुनरुत्थानवाद स्वामी श्रद्धानंद ने वर्ष 1922 में दिल्ली की जामा मस्जिद में भाषण दिया था। उन्होंने सबसे पहले वेद मंत्रों का पाठ किया और एक प्रेरक भाषण दिया। यह विश्व के इतिहास में एक असाधारण क्षण था। उन्होंने हिंदी और उर्दू दोनों में धार्मिक और आध्यात्मिक मुद्दों पर लिखा।

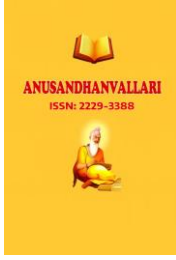
एल्ट, के. (2020) भगवा स्वस्तिक हिंदू फासीवाद की धारणा। 1923 तक, उन्होंने सामाजिक क्षेत्र को छोड़ दिया और शुद्ध आंदोलन (हिंदू धर्म में वापसी) के अपने पहले के काम में पूरे दिल से लग गए। 1923 के अंत में, वे भारतीय हिंदू शुद्धि सभा के अध्यक्ष बने। उन्होंने धर्मांतरित हिंदुओं को हिंदू धर्म में वापस लाने के लिए एक अभियान शुरू किया।

सरस्वती, स्वामी दयानंद (2000) हिंदू धर्म आचार्य सभा, में हिंदू धर्म आचार्य सभा की पहल पर के प्रयासों से विभिन्न संप्रदायों के हिंदू धार्मिक प्रमुखों का एक शीर्ष निकाय बनाया गया और उसे बुलाया गया। विभिन्न परंपराओं के प्रमुखों की एक सभा मिलती है, हिंदू धर्म से संबंधित समकालीन मुद्दों पर चर्चा करती है और समाज और देश को नेतृत्व और सेवा प्रदान करती है।

सरस्वती, स्वामी दयानंद (2009) भगवद गीता गृह अध्ययन कार्यक्रम, स्वामी दयानंद द्वारा डिजाइन किया गया BGHS पाठ्यक्रम भगवद गीता की शिक्षा प्रस्तुत करता है और यह कार्यक्रम अमेरिका, अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, भारत, जापान, मलेशिया, सिंगापुर और यूनाइटेड किंगडम सहित कई देशों में संचालित किया जाता है। यह सामग्री कई भाषाओं में उपलब्ध है।

शोध के उद्देश्य, स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती के विचारों का वर्तमान परिपेक्ष्य में एक अध्ययन इस विषय से जुड़े इस शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य होंगे—

- स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती के अनुसार नैतिक शिक्षा में सद्गुणों को प्रोत्साहित करना और दूसरी ओर दोषों को निरुत्साहित करना शामिल है।
- बच्चों को नैतिक शिक्षा प्रदान करने के लिए माता-पिता और शिक्षकों को स्वयं उच्च आदर्श प्रस्तुत करने चाहिए। इसका आज समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। इसका वर्तमान शैक्षिक परिपेक्ष्य में अध्ययन करना है।



➤ स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती के अनुसार मनुष्य तभी विद्वान होता है जब उसके पास तीन उचित प्रशिक्षक माता, पिता और गुरु हों इस मत का इसका वर्तमान शैक्षिक परिपेक्ष्य में अध्ययन करना है।

शोध के प्रश्न,

➤ स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती ने जहां तक स्त्री शिक्षा की बात है, स्वामी जी इस बात की ओर पुरजोर वकालत करते हैं कि सभी महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए माता-पिता द्वारा बेटियों को भी बेटों के समान स्कूल जाने के समान अवसर दिए जाने चाहिए, इसकी विस्तृत चर्चा करनी है।

➤ स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती के अनुसार पढ़ाई का पाठ्यक्रम भी लड़कों और लड़कियों के लिए थोड़ा अलग होना चाहिए उचित शिक्षा एवं छात्रों के पूर्ण विकास के लिए स्वामी दयानंद जी ने शिक्षक की भूमिका को बहुत महत्व दिया है।

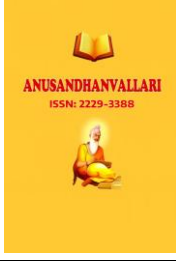
➤ इनके अनुसार शिक्षकों को विद्वान, अच्छे चरित्र वाले और अपने कार्य के प्रति समर्पित होना चाहिए शिक्षकों को अहंकारी भी नहीं होना चाहिए गुरु और शिष्य के बीच पिता और पुत्र जैसा घनिष्ठ संबंध होना चाहिए, इसकी विस्तृत चर्चा करनी है।

शोध विधि,

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती व दयानंद सरस्वती का मुख्य उद्देश्य हिंदुओं को उनके धर्म के मूल, जो कि उनके अनुसार वेद हैं की ओर ले जाना था उनका मानना था कि वेदों के ज्ञान की सहायता से हिंदू उस समय देश में प्रचलित अवसादग्रस्त धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों को सुधारने में सक्षम होंगे उनके अनुयायियों में श्री अरबिंदो, एस राधाकृष्णन और बाबा रामदेव शामिल हैं। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों को खत्म करने और समाज में सुधार लाने के लिए काम किया। उन्होंने महिलाओं को शिक्षा देने पर जोर दिया और बाल विवाह का विरोध किया। इस शोध के लिए विभिन्न शोध विधियों में से **शोधार्थिनी द्वारा वर्णनात्मक शोध विधि** को इस शोध में प्रयोग किया गया है इस शोध विधि के साथ साथ में इस शोध में अनुसंधान की ऐतिहासिक शोध विधि का भी प्रयोग करुंगी क्योंकि यह शोध मानवतावादी आदर्श के रूप में पूर्णता के आदर्श के अलावा, दयानंद जी व स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने सभी अंधविश्वासों, अवैज्ञानिक विश्वासों, अमरताओं और धोखे की कड़ी निंदा करते हुए अपनी मानवतावादी प्रवृत्ति दिखाई। विज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अपने समर्थन में, वह कई समकालीन प्रत्यक्षवादियों की तुलना में अधिक सकारात्मक थे। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती का मानव जीवन के हर क्षेत्र में कारण के उपयोग पर जोर देने वाले अग्रणी तर्कवादियों में से एक थे।

निष्कर्ष,

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने समाज में व्याप्त अनेकों कुरीतियों व रुढ़ियों और अंधविश्वासों से समाज को उन्मुक्त करने का सफल प्रयास किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी का सामाजिक आधुनिक शिक्षा पर अत्यन्त प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। वे मूर्ति पूजा के विरोधी थे जो आज समाज की अंधविश्वासी परम्परा का सबसे महत्वपूर्ण कारण बना हुआ है। वे शाश्वत सत्य पर विश्वास रखते थे, जिसका आज समाज पर काफी प्रभाव व बदलाव देखने को आया है। स्वामी जी पुरुष व महिला व गरीब आदि की शिक्षा की वकालत करते हैं जो कि वर्तमान समय में स्पष्ट छलकती है। आज गरीबी अमीरी का फर्क समाज में कम देखने को मिलता है। समाज में छुआछूत जैसी भयानक बीमारी का उपचार किया था। जो समाज को गहरे गर्त में ले गयी थी। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी ने समाज में विधवा विवाह जैसी कुरीती या कुप्रथा को नष्ट करने की शक्ति समाज को प्रदान की जिसका वर्तमान में अच्छा प्रभाव व परिणाम देखने को मिल रहा है। और सरकारी व गैरसरकारी कार्यरत व्यक्ति का अवकाश का सदुपयोग में लेने की प्रेरणा अपने शिक्षण में प्रदान की जिससे आज व्यक्ति अवकाश का पूर्व अनुमान कर कार्य को पूरा करता है और युवा वर्ग से विशेषकर उन्होंने शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करने की शिक्षा दी। जिससे आज युवा वर्ग उनसे प्रेरित होकर समाज में नये आयामों को छू रहा है। अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि हमें अभी भी इन महापुरुषों की प्रेरणाओं से भारतीय समाज में चार चाँद लगा सकते हैं। जिससे हमारा स्वस्थ समाज व स्वस्थ राष्ट्र होगा। हमारा देश फिर से एक बार जरूर विश्वगुरु बनेगा। क्योंकि भारत पहले भी विश्व गुरु रहा है और भविष्य में विश्वगुरु रहेगा। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के प्रणेतता स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने कहा भी था कि 'वेदों की ओर लौटो'।



सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- [1] शंकराचार्य (1963). ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य (गौडपाद चारिका सहित) तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक और श्वेताश्वतर उपनिषद् शांकरभाष्य तथा हिन्दी अनुवाद सहित, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 123
- [2] भारतीय, बी.एल. (2006). ऋषि दयानन्द के सिद्धान्त और जीवन दर्शन, घूडमल प्रहलाद कुमार, आर्य धर्मार्थ न्यास, ब्यानिया पाका, हिण्डौन सिटी, पृष्ठ 125
- [3] शुक्रनीति (2027 वि.). गंगाप्रसाद शास्त्री (अनु.) भारतीय राजनीति प्रकाशन, शामली (उत्तर प्रदेश), पृष्ठ 157
- [4] श्री अरविन्द (1969). योग समन्वय, पूर्वार्द्ध, उत्तरार्द्ध, सोसायटी, पाण्डिचरी-2 पृष्ठ 23
- [5] श्री अरविन्द (1948). वेद रहस्य, प्रथम प्रताप दिल्ली, पृष्ठ 41
- [6] मिश्रबंधु, वी. (1972). (खण्ड-4), मिश्रबंधु दुलारे लाल भार्गव, अध्यक्ष गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, पृष्ठ 122
- [7] श्री अरविन्द (1969). गीता प्रबन्ध, श्री अरविन्द सोसायटी, पाण्डिचरी, पृष्ठ 114
- [8] अवस्थी, आर.के. (1985). आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक विन्तन रिसर्च पब्लिकेशनस, जयपुर, पृष्ठ 117
- [9] बाशम, ए.एल. (1997). अद्भुत भारत, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, पृष्ठ 87
- [10] पण्डित, भगवद्दत्त. (1981). ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन, भाग-1, रामलाल कर्पूर ट्रस्ट, बहालगढ़, हरियाणा, पृष्ठ 54
- [11] बुद्धिप्रकाश, शास्त्री, बी.आर., देव एवं कृष्णपाल (1951). सार्वभौम वैदिक धर्म, दयानन्द वैदिक शोध पीठ, दयानन्द कॉलेज, अजमेर, पृष्ठ 137
- [12] पं. बुद्धदेव जी मीरपुरी (वि. सं. 1940). संस्काविधि व्याख्या महात्मा हंसराज, वैदिक साहित्य शिक्षा विभाग, लाहौर, पृष्ठ 245
- [13] संन्यासी, एस.सी. (सम्पादक) (1985). शुद्धि-व्यवस्था, भारतीय हिन्दू शुद्धि सना, दिल्ली, पृष्ठ 11
- [14] सरस्वती, एस.डी. (1971). आर्याभिविनय, दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली, पृष्ठ 42
- [15] कुमार ए आर. (2024) भारतीय शिक्षा प्रणाली में शैक्षिक अनुष्ठानों की भूमिका और प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च - ग्रंथालय 12;12इए 119दृ128¹जजचेरुध्कवपण्वतहध10²9121¹हतंदर्जीसंली¹अ12¹पप12¹2024¹6055
- [16] टुंगो ए सी. (2024) छम् 2020 के तहत भारत में प्राथमिक शिक्षा में पाठ्यक्रम और शैक्षणिक विकास। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च - ग्रंथालय 12;4इए 79दृ87¹जजचेरुध्कवपण्वतहध10²9121¹हतंदर्जीसंली¹अ12¹पप4¹2024¹5595
- [17] तस्लीम ए एन.ए और गंगाधर ए एस. (2022) बड़े पैमाने पर बदलावों में स्टैकहोल्डर डायनामिक्स को नेविगेट करना। जर्नल ऑफ एडवांस मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च 1;2इए 48.56¹